# तुम्हारे बारे में...

मानव कौल

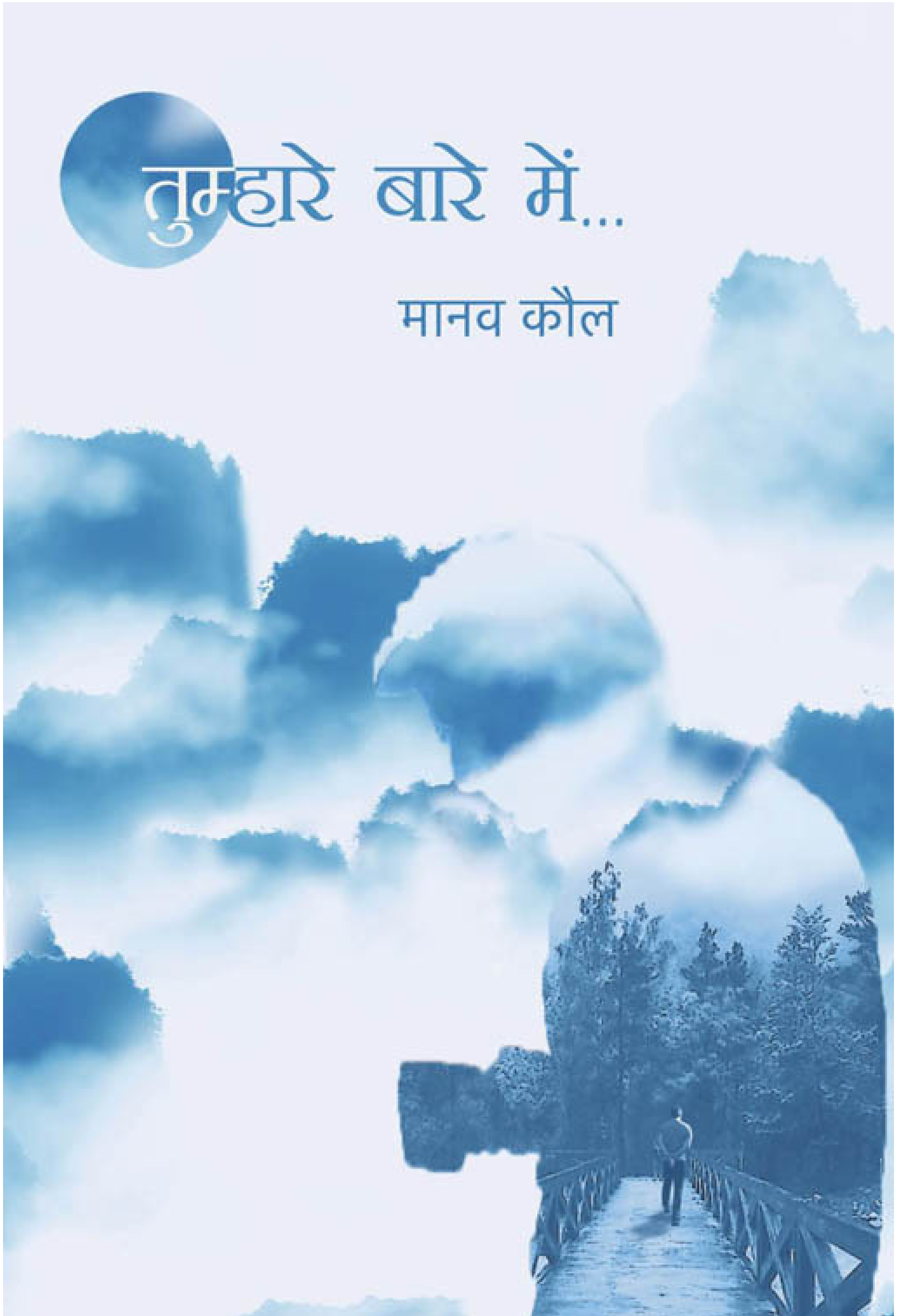
तुम्हारे बारे में...
मानव कौल

## तुम्हारे बारे में...
(न कहानी, न कविता)

तुम्हारे लिए ...

Manu

# तुम्हारे बारे में...

मानव कौल

हिन्द युग्म
hindyugm.com

**ISBN :** 978-93-87464-30-8

**प्रकाशक :**
हिन्द-युग्म
201 बी, पॉकेट ए, मयूर विहार फ़ेस-2, दिल्ली-110091
मो.- 9873734046, 9968755908

**डिजाइन :** सौमित्र सिंह
**लेखक की तस्वीर :** सुगंधा गर्ग

**पहला संस्करण : दिसंबर 2018**

© मानव कौल

Tumhare Baare Mein
by *Manav Kaul*

Published By
Hind Yugm
201 B, Pocket A, Mayur Vihar Phase 2, Delhi-110091
Mob : 9873734046, 9968755908
Email : sampadak@hindyugm.com
Website : www.hindyugm.com

**First Edition: Dec 2018**

क्या तुमने कभी देखा है ख़ुद को पढ़ते हुए?
मैंने उस दृश्य को लिखा है तुम्हारे लिए...

# मेरे निज में तुम्हारा प्रवेश

मैं बहुत पहले एक लड़के को जानता था जो एक तस्वीर बनाने के ख़्वाब देखा करता था। उस तस्वीर में वह ख़ुद को चिड़िया की तरह बनाना चाहता था पर हमेशा उससे पतंग बन जाती। वह पतंग बनाकर रुक जाता। फिर वह धीरे-धीरे उस उड़ती हुई पतंग का धागा ड्रॉ करता। अंत में वह धागा किसी के हाथ में होगा इस बात पर उसका ब्रश रुक जाता। वह उस तस्वीर को फाड़ता और फिर दूसरी तस्वीर बनाना शुरू करता। पर हर बार इस बात के जवाब पर चित्र रुक जाता कि उसकी पतंग का धागा किसके हाथ में है? क्यों वह चिड़िया नहीं हो पाया? पतंग होना क्या मुक्त उड़ने से समझौता है? उसने वह आदमी कभी नहीं बनाया जिसके हाथ में उसकी पतंग का धागा हो सकता है। वह लगातार कैनवास पर कैनवास फाड़ता रहा। समझौता, यह शब्द उसकी चौखट कभी लाँघ नहीं पाया। फिर बहुत वक़्त के बाद, एक प्रयास में पतंग का धागा टूट गया और पहली बार उसे अपनी पेंटिंग पूरी होती हुई दिखी। उसने टूटने को, छोड़ देने से पकड़ा। छोड़ देने में, मृत्यु-सी मुक्तता थी।

कठिन से आसान की तरफ़ बढ़ना एक सामान्य प्रक्रिया है—किसी भी कला में। मैं अपने इस लिखे को उस प्रक्रिया के बहुत क़रीब पाता हूँ।

...

मुझे सपने बहुत आते हैं—ढेरों सपने। सुबह उठकर कुछ याद रह जाते हैं और कुछ हमेशा के लिए रात के अँधेरे में ग़ायब हो चुके होते हैं। जो सपने याद रह जाते हैं, सुबह की शांति में उन्हें वापिस दुहराने में एक आवाज़ रहती है। यह आवाज़ मेरी नहीं है। यह उसकी है जो दिन भर मुझे सपने सुनाता है। मैं हर बार इस आवाज़ से पूछता हूँ, “जो सपने याद नहीं रहे, क्या मैंने वे सपने देखे थे?” इस तरह के सवाल अधिकतर मैं लंबी यात्राओं या लंबी ख़ामोशी के दौरान पूछता हूँ। उस आवाज़ का जवाब होता है, “कुछ धुँधले चित्र याद हैं, उन सपनों के मुझे। तुम सुनना चाहोगे?” हम दोनों को पता है कि यह झूठ है। हमें कुछ याद नहीं, पर उसे पता है कि पहाड़ों में धुँध मुझे कितनी पसंद है। सब साफ़ दिखने से कम दिखना कितना कुछ देता है! बहुत बोलने से चुप कितना कुछ कहता है! हम एक जगह चुनते हैं, जहाँ बैठे रहने का सुख है, और वह खोया हुआ सपना सुनाता है।

क्या जो हमें याद नहीं है, वह हमने जिया ही नहीं है?

...

माँ हमेशा मुझे मेरे बचपन की बातें बताती हैं। माँओं को सब याद रहता है। वह क़िस्से ऐसे सुनाती हैं, मानो कल ही की बात हो। उनके क़िस्सों में खोए हुए बेटे की टीस है।

मैं सारे क़िस्से बड़े चाव से सुनता हूँ। उन क़िस्सों के बाद हम बहुत देर तक प्रेम महसूस करते हैं। वह अपने क़िस्सों से मुझे छूती हैं और पा लेती हैं। मुझे उन क़िस्सों में, मैं याद नहीं हूँ, पर मुझे हमेशा जगहें याद रह जाती हैं। ऐसे जैसे मैं कल तक वहीं रह रहा था। घर की दरारें, बारिश में खिड़कियों की नमी, पड़ोस से आती दाल में तड़के की ख़ुशबू, मोहल्ले के तारों में अटकी हुए पतंग, सारा कुछ मैं आज भी चख सकता हूँ। पर उन जगहों से लोग ग़ायब हैं। मैं भी वहाँ नहीं हूँ, बस एक आवाज़ है जो मेरी नहीं है। यह वह आवाज़ है जो कहती है कि गली के मोड़ पर मोहन तुम्हें दिखेगा और मोहन मुझे देखने लगता है, जबकि मोहन कभी था ही नहीं। वह सारी जगह जो मेरे शरीर से चिपकी हुई है, वह मोहन को मेरे खोए हुए सपनों से खींचकर सामने खड़ा कर देती है। जबकि खोए हुए सपने कभी थे ही नहीं। तभी मैं क़ागज़ और क़लम उठाता हूँ। मोड़ पर खड़े मोहन को लिखता हूँ और वह मुहल्ले के तारों पर अटकी पतंग की बात करता है।

अभी कुछ वक़्त से, इन सारे प्रयासों और प्रयोगों में लगने लगा था कि मैं छू नहीं पा रहा हूँ वह जो असल में वहाँ है। मैं हर चीज़ का झूठ बटोरने में लगा हूँ। जो जैसा है, उसे वैसा का वैसा जीना मेरे बस के बाहर होता जा रहा है। मैं उन लोगों को देख रहा था, उनसे देर तक संवाद कर रहा था, जो असल में वहाँ थे ही नहीं।

...

मैं उस आदमी से दूर भागना चाह रहा था जो लिखता था। बहुत सोच-विचार के बाद एक दिन मैंने उस आदमी को विदा कहा जिसकी आवाज़ मुझे ख़ालीपन में ख़ाली नहीं रहने दे रही थी। मैंने लिखना बंद कर दिया। क़रीब तीन साल कुछ नहीं लिखा। इस बीच यात्राओं में वह आदमी कभी-कभी मेरे बग़ल में आकर बैठ जाता। मैं उसे अनदेखा करके वहाँ से चल देता। कभी लंबी यात्राओं में उसकी आहट मुझे आती रही, पर मैं ज़िद में था कि मैं इस झूठ से दूर रहना चाहता हूँ। इस बीच लगातार मेरे पास फ़ोन था, जिससे मैं यात्राओं में तस्वीरें खींचता रहा। फिर किसी बच्चे की तरह यहाँ-वहाँ देखकर कि कहीं वह आदमी आस-पास तो नहीं है? मैं अपने फ़ोन में नोट्स खोलता और ठीक उस वक़्त का जो भी महसूस हो रहा है, जिसे मैं छू भी सकता हूँ, दर्ज कर लेता। इन दस्तावेज़ों को उस वक़्त खींची तस्वीरों के साथ इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर देता। मानो अंतरिक्ष में संदेश छोड़ा हो। शायद मैं इस तरह का लिखना बहुत समय से तलाश रहा था, जो न कविता है, न कहानी है, वह बस उस वक़्त की सघनता का एक चित्र है जिसमें पतंग बिना धागे के उड़ रही है।

इस किताब में यात्राएँ हैं, नाटकों को बनाने का मुक्त अकेलापन है, कहानियाँ हैं, मौन में बातें हैं, इंस्टाग्राम की लिखाई है और लिखने की अलग-अलग अवस्थाएँ हैं। एक तरीक़े का बाँध था, जिसका पानी कई सालों से जमा हो रहा था। इस किताब में मैंने वह बाँध तोड़ दिया है।

**मानव कौल**

# इस घर की चाबियाँ

मैं अब वैसा नहीं रह गया हूँ
तुम कहना कि
क्या यह अंत है
इस गहरी रात में
वह ख़ुश थी
देवदार के जंगलों में
मैं तुम्हारा नाम लिखना चाहता था
हमारे बीच कभी भी
प्रेम को कितनी ही बार
क्या तुम वहाँ हो अभी भी
उसे देख पाऊँ के ठीक पहले
वे दोनों बहुत ही
वह अगस्त का महीना था
हर बार कुछ नया तलाशने में
तुमने मुझे प्रेम करना सिखाया
वक़्त बीतते-बीतते
जो बीत गया
लोग कहते हैं
बहुत-सी शिकायतें थीं
जाने कितने चौराहों पर

A cage went in search of a bird
बड़े शौक़ से मेरा घर जला
सामान्य जीते हुए जब
कल रात बैंकॉक से
जब शाम को टहलने निकलता हूँ
भोपाल में सुबह की लंबी सैर में
आज सुबह कोई
बहुत पुरानी बात है

स्पेन में कई दिन

स्पेन के हर शहर में
इतिहास के अवशेषों से
मैं जब अपने गाँव में था
श्रीलंका के जंगलों में
दिन भर आज
आज सुबह-सुबह
पहाड़ों में बारिश
मनाली जब भी आता हूँ
मैं ख़ुद से कहता चलता था
बीच जंगल में सुस्ताते हुए
हंसा के घर पहुँचा
मैं पहाड़ों को देखता हूँ
लंदन को मैंने समझा
स्कॉटलैंड
न्यूयॉर्क

किसी नए लेखक को खोजने में
मैं अभी भी विश्वास करता हूँ
बाहर आजकल एक छोटी चिड़िया
चलो एक अलग कहानी सोचते हैं
मैं बूढ़ा हो चला हूँ
मैं वह नहीं हूँ जो दिखता हूँ
निर्मल और विनोद
एक दिन मैंने देखा
किसी भी कहानी में
बहुत दिन घर में गुज़ार दूँ
कहानी ज्यों ही लिखकर
कुछ नाटक कभी पूरे नहीं हुए
शाम
पिछले कुछ दिनों से
अचानक लगता है
A Very Easy Death
बहुत सुबह उठना
हर चीज़ इतनी बिखरी हुई क्यों हैं
सुबहों में हर नई किताब
वेटर एक शुगर फ़्री ले आया

हर लड़ाई के पहले
पूरी दुपहर देर तक
वर्जीनिया वुल्फ
कल कुछ

हम कैसे नाटक कर रहे होते हैं
ओल्ड मनाली
कितनी ही देर तक
कितना वक़्त लगता है
हम गिरेंगे
शक्कर के पाँच दाने
आज इतने सालों बाद
बहुत गहरे उतरना पड़ेगा
वह बहुत कमाल अभिनेत्री थीं
मेरी निर्मल वर्मा से संवाद
Colourblind नाटक
हमारे दोस्तों के बीच
Red Sparro2

मेरे घर के सामने
घर की चौखटों
वह गाँव में
आसमान देखते ही
बार-बार इच्छा होती है
मेरे भाई और मेरी उम्र
मैं इसकी ख़ुशबू पहचानता हूँ
नदी से देर तक बातें
एक उम्र में लगता था
कितनी देर लगती है कूदने में
किसी को विश्वास नहीं था
यह स्थिति हर बारिश में होती है
किसी के मरने का
धीरे-धीरे सरकते हुए
कभी बहुत अजीब-सी
बचपन के कुछ घर
वह कहती थी

बचपन में तेज़ बारिश
बहुत दिनों बाद
हम उन सबको मार देंगे
हवाई जहाज़ हमेशा विदेशी लगते थे
गहरे अँधेरे में
बहुत कठिन दिनों में
पहले शायद पूरी पृथ्वी
बचपन के पुराने पीले पड़ गए एलबम
बहुत गहरी लंबी रातों में
हम सबके कितने भेद हैं
सब कहते हैं
वजह ढूँढ़ने में
मैं अपनी माँ के लिए
मेरे घर के नीचे वाला जो घर है
मैं जब ख़ुद से झूठ बोलता हूँ
ठंड के दिनों में
आओ छुप जाते हैं
जब भी मेरे साथ
आज दीवाली है
कुछ भी अच्छा होता है
मैंने एक दिन माँ से कहा था
इतना आसान कहाँ है
आसान, कठिन है और कठिन है
साल दर साल बीतेंगे
हमारे अच्छे समय में
जब भी माँ
हम सब यूँ ही
कई बार हम दुखी होते हैं
उसने कसकर पत्थर मारे
मैंने बहुत प्रयत्न किए

मैं अब वैसा नहीं रह गया हूँ, जैसा तुमने मुझे छोड़ा था। मैं वहीं हूँ, पर उस पगडंडी पर अब डामर की सड़क बिछ गई है। आस-पास का सारा हरा स्याह हो गया है। लगातार गिरने का डर बना रहता है, सो मेरी जड़ें निकल आई हैं। पर जहाँ हम मिला करते थे, वे कुछ जगहें अब भी हरी हैं। तेज़ धूप में जब भी उन छायाओं से गुज़रता हूँ तो हिचकी आ जाती है।

क्या तुम कभी प्राग गई हो? अगर जाओ तो वहाँ काफ़्का की क़ब्र पर ज़रूर जाना और वहाँ सुनना उस ख़ामोशी को जो बहुत थककर चूर हो जाने से, गहरी नींद के बाद बिस्तर की सलवटों में रह जाती है। वहाँ सपने नहीं हैं, वहाँ बस एक ठंडी चुप है। तुम उस क़ब्र पर कुछ छोड़ आना।

सुना है छूटी हुई चीज़ों की जड़ें उग आती हैं!